AMERICAN JOURNAL OF AI CYBER COMPUTING MANAGEMENT
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
E-ISSN:3069-0102
VOL.6, NO. 2(1) (2026)

दिव्यांग एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

लोकेश कुमार शर्मा

शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. मंजू शर्मा

शोध निर्देशिका, असिस्टेंट प्रोफेसर

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई. केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य दिव्यांग एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना है। वर्तमान डिजिटल युग में सोशल मीडिया किशोरों के जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है, जिसके कारण उनके भावनात्मक विकास पर इसके प्रभाव का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध हेतु दिव्यांग एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों का चयन कर उनसे संबंधित आंकड़ों का विश्लेषण सहसंबंध विधि द्वारा किया गया। अध्ययन में सोशल मीडिया उपयोग एवं भावनात्मक परिपक्वता के मध्य संबंध का परीक्षण किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि दिव्यांग विद्यार्थियों में सोशल मीडिया एवं भावनात्मक परिपक्वता के मध्य सहसंबंध गुणांक नगण्य एवं असार्थक है। वहीं सामान्य विद्यार्थियों में सहसंबंध नकारात्मक संबंध को दर्शाता है। विद्यालय के प्रकार के आधार पर भी समान प्रवृत्ति देखी गई, जहाँ दिव्यांग विद्यार्थियों में संबंध नगण्य रहा, जबकि

सामान्य विद्यार्थियों में सोशल मीडिया उपयोग के साथ भावनात्मक परिपक्वता में कमी देखी गई। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सोशल मीडिया का प्रभाव सामान्य विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर नकारात्मक रूप से पड़ता है, जबकि दिव्यांग विद्यार्थियों पर इसका प्रभाव नगण्य है। यह अध्ययन शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द:- सोशल मीडिया, भावनात्मक परिपक्वता, दिव्यांग विद्यार्थी, सामान्य विद्यार्थी, किशोरावस्था, सहसंबंध, विद्यालय प्रकार, मनोवैज्ञानिक विकास

प्रस्तावना

आधुनिक डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने मानव जीवन के विभिन्न आयामों को गहराई से प्रभावित किया है, विशेषकर किशोरावस्था में यह प्रभाव अधिक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। किशोरावस्था वह संवेदनशील अवस्था है, जिसमें व्यक्ति अपनी भावनाओं, विचारों एवं सामाजिक पहचान का विकास करता है। इस अवधि में भावनात्मक परिपक्वता का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यही गुण व्यक्ति को परिस्थितियों के अनुरूप संतुलित प्रतिक्रिया देने, निर्णय लेने तथा सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ बनाने में सहायता करता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यूट्यूब आदि किशोरों के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं। इन माध्यमों के माध्यम से किशोर अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं, दूसरों से जुड़ते हैं तथा विभिन्न अनुभव प्राप्त करते हैं। एक ओर यह माध्यम उन्हें आत्म-अभिव्यक्ति, सामाजिक सहभागिता एवं भावनात्मक सहयोग प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर आभासी तुलना, नकारात्मक टिप्पणियाँ एवं अत्यधिक निर्भरता जैसी स्थितियाँ उनके भावनात्मक संतुलन को प्रभावित कर सकती हैं।

दिव्यांग एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों के संदर्भ में सोशल मीडिया का प्रभाव भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट हो सकता है। दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए सोशल मीडिया एक ऐसा मंच बन सकता है, जहाँ वे अपनी सीमाओं से परे जाकर सामाजिक संपर्क स्थापित कर सकते हैं एवं आत्मविश्वास विकसित कर सकते हैं। वहीं, सामान्य विद्यार्थियों में इसका प्रभाव प्रतिस्पर्धा, सामाजिक तुलना एवं भावनात्मक उतार-चढ़ाव के रूप में अधिक दिखाई दे सकता है। इस प्रकार, सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग के संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि दिव्यांग एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर इसके प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए, ताकि यह समझा जा सके कि यह माध्यम उनके भावनात्मक विकास को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है।

अध्ययन का औचित्य

वर्तमान समय में सोशल मीडिया का उपयोग किशोरों के जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है, जिससे उनके व्यवहार, भावनाओं एवं सामाजिक संबंधों पर व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। भावनात्मक परिपक्वता, जो कि संतुलित व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है, सोशल मीडिया के प्रभाव से प्रभावित हो सकती है। इसलिए इस विषय का अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक हो जाता है। दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अनुभव, सामाजिक परिवेश एवं मनोवैज्ञानिक स्थितियाँ भिन्न होती हैं, जिसके कारण सोशल मीडिया का प्रभाव भी दोनों समूहों पर अलग-अलग हो सकता है। इस तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट किया जा सकेगा कि सोशल मीडिया इन दोनों वर्गों की भावनात्मक परिपक्वता को किस प्रकार प्रभावित करता है। यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों एवं नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि इसके माध्यम से वे यह समझ सकेंगे कि किशोरों के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किस प्रकार संतुलित एवं सकारात्मक बनाया जा सकता है। साथ ही, यह अध्ययन दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए अधिक समावेशी एवं संवेदनशील शैक्षणिक

वातावरण के निर्माण में भी सहायक सिद्ध होगा। अतः प्रस्तुत अध्ययन न केवल शैक्षणिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सार्थक है।

शोध के उद्देश्य

1. दिव्यांग एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. दिव्यांग एवं सामान्य किशोर सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

1. दिव्यांग एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. दिव्यांग एवं सामान्य किशोर सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में राजस्थान राज्य के भरतपुर संभाग के भरतपुर, धौलपुर, करौली एवं सवाई माधोपुर जिले से कुल किशोर विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है, जिनमें 240 सामान्य किशोर एवं 240 दिव्यांग किशोर हैं।

उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा प्रदत्त संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों को प्रयोग में लिया जायेगा -

- भावनात्मक परिपक्वता मापनी - तारासभापैथी द्वारा निर्मित एवं ने शनल साइकोलोजीकल कॉरपोरेशन द्वारा प्रकाशित (हिंदी संस्करण)।
- सोशल मीडिया - डॉ. सुभाष सरकार और प्रसेनजीत दास द्वारा निर्मित

सांख्यिकी विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या एवं विश्लेषण

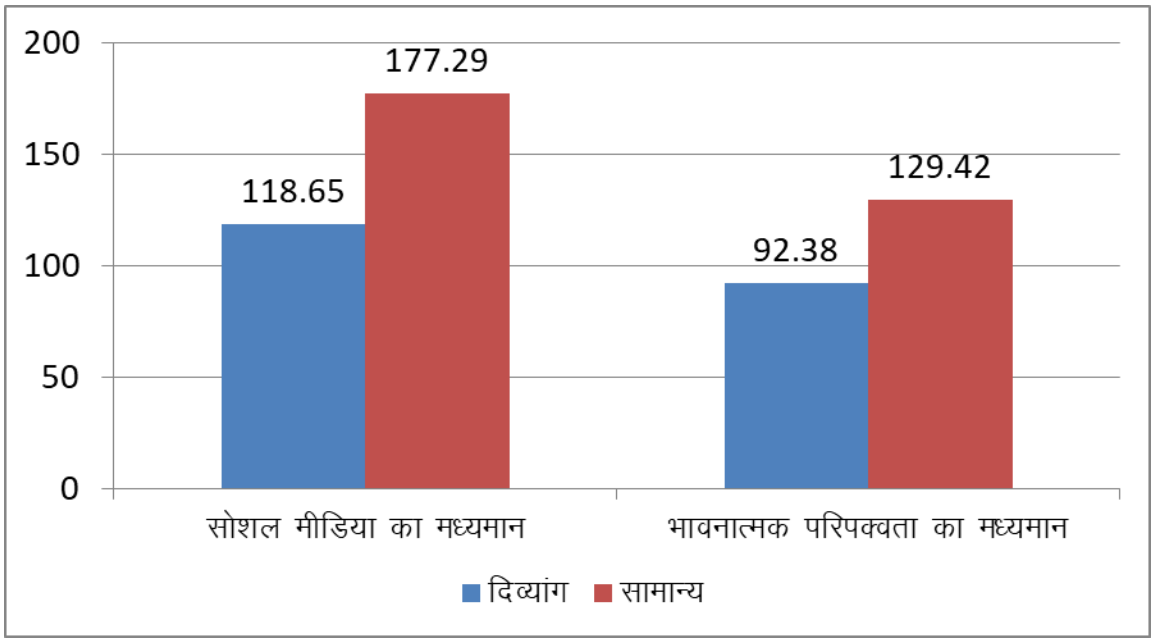
परिकल्पना 1 - दिव्यांग एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका संख्या: 1

दिव्यांग एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का प्रभाव

समूह	संख्या	सोशल	भावनात्मक	सहसंबंध	सार्थकता	संबंध

		मीडिया का मध्यमान	परिपक्वता का मध्यमान	गुणांक		
दिव्यांग	240	118.65	92.38	0.05	असार्थक	सकारात्मक नगण्य
सामान्य	240	177.29	129.42	ट0.28	सार्थक	नकारात्मक



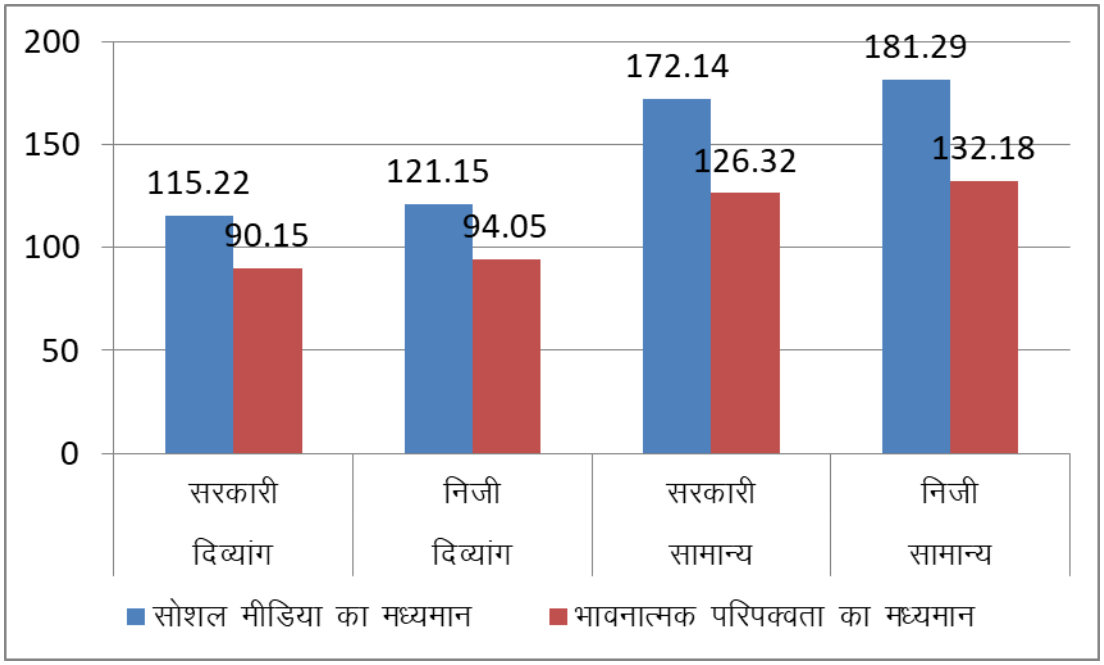
तालिका के अनुसार, दिव्यांग बच्चों का सोशल मीडिया का मध्यमान 118.65 और भावनात्मक परिपक्वता का मध्यमान 92.38 पाया गया। इनके बीच सहसंबंध गुणांक 0.05 है, जो सकारात्मक नगण्य है और सार्थक नहीं माना गया। इसका अर्थ है कि दिव्यांग बच्चों में सोशल मीडिया और भावनात्मक परिपक्वता के बीच कोई स्पष्ट और सार्थक संबंध नहीं है। इसके विपरीत, सामान्य बच्चों का सोशल मीडिया का मध्यमान 177.29 और भावनात्मक परिपक्वता का मध्यमान 129.42 पाया गया। इनके बीच सहसंबंध गुणांक -0.28 है, जो सार्थक नकारात्मक संबंध को दर्शाता है। यह संकेत देता है कि सामान्य बच्चों में सोशल मीडिया के अधिक उपयोग से उनकी भावनात्मक परिपक्वता में कमी देखने को मिलती है।

परिकल्पना 2 - दिव्यांग एवं सामान्य किशोर सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका संख्या: 2

दिव्यांग एवं सामान्य किशोर सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का प्रभाव

समूह	विद्यालय प्रकार	संख्या	सोशल मीडिया का मध्यमान	भावनात्मक परिपक्वता का मध्यमान	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता	संबंध
दिव्यांग	सरकारी	60	115.22	90.15	0.04	असार्थक	सकारात्मक नगण्य
दिव्यांग	निजी	60	121.15	94.05	0.06	असार्थक	सकारात्मक नगण्य
सामान्य	सरकारी	60	172.14	126.32	-0.25	सार्थक	नकारात्मक
सामान्य	निजी	60	181.29	132.18	-0.30	सार्थक	नकारात्मक



तालिका के अनुसार, दिव्यांग बच्चों में सरकारी विद्यालयों का सोशल मीडिया मध्यमान 115.22 और भावनात्मक परिपक्वता का मध्यमान 90.15 है, जबकि निजी विद्यालयों में सोशल मीडिया मध्यमान 121.15 और भावनात्मक परिपक्वता का मध्यमान 94.05 है। इनके बीच सहसंबंध गुणांक क्रमशः 0.04 और 0.06 है, जो सकारात्मक नगण्य हैं और सार्थक नहीं माने गए। इसका अर्थ है कि दिव्यांग बच्चों में सोशल मीडिया और भावनात्मक परिपक्वता के बीच कोई स्पष्ट संबंध नहीं है।

सामान्य बच्चों में सरकारी विद्यालयों का सोशल मीडिया मध्यमान 172.14 और भावनात्मक परिपक्वता का मध्यमान 126.32 है। निजी विद्यालयों में सोशल मीडिया मध्यमान 181.29 और भावनात्मक परिपक्वता का मध्यमान 132.18 है। इनके बीच सहसंबंध गुणांक क्रमशः -0.25 और -0.30 है, जो सार्थक नकारात्मक संबंध को दर्शाते हैं। इसका अर्थ है कि सामान्य बच्चों में सोशल मीडिया के अधिक उपयोग से उनकी भावनात्मक परिपक्वता में कमी आती है।

निष्कर्ष

प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि दिव्यांग एवं सामान्य किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता पर सोशल मीडिया का प्रभाव समान नहीं है। दिव्यांग विद्यार्थियों के संदर्भ में सोशल मीडिया एवं भावनात्मक परिपक्वता के मध्य सहसंबंध नगण्य एवं असार्थक पाया गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि सोशल मीडिया का उनके भावनात्मक विकास पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। इसके विपरीत, सामान्य विद्यार्थियों में सोशल मीडिया एवं भावनात्मक परिपक्वता के मध्य सार्थक नकारात्मक संबंध पाया गया, जो यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से उनकी भावनात्मक परिपक्वता में कमी आती है। विद्यालय के प्रकार के आधार पर भी यह प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जहाँ सामान्य विद्यार्थियों में सरकारी एवं निजी दोनों ही विद्यालयों में नकारात्मक संबंध पाया गया, जबकि दिव्यांग विद्यार्थियों में यह संबंध नगण्य रहा। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सोशल मीडिया का प्रभाव सामान्य विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास को अधिक प्रभावित करता है, जबकि दिव्यांग विद्यार्थियों में इसका प्रभाव सीमित रहता है। यह अंतर दोनों समूहों की सामाजिक सहभागिता, उपयोग के उद्देश्य एवं मनोवैज्ञानिक संरचना में भिन्नता के कारण उत्पन्न हो सकता है।

सुझाव

- विद्यार्थियों के लिए सोशल मीडिया उपयोग का समय निर्धारित किया जाना चाहिए, ताकि इसका नकारात्मक प्रभाव कम किया जा सके।
- विद्यालयों में भावनात्मक परिपक्वता विकसित करने हेतु जीवन कौशल आधारित कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए।
- अभिभावकों को बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग पर निगरानी रखते हुए उन्हें सकारात्मक दिशा में मार्गदर्शन देना चाहिए।

- विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के सही उपयोग एवं उसके प्रभावों के प्रति जागरूक करने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए ऐसे डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित किए जाएँ, जो उनके सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित करें।
- विद्यालयों में काउंसलिंग सेवाओं को सुदृढ़ किया जाए, जिससे विद्यार्थियों की भावनात्मक समस्याओं का समाधान किया जा सके।

संदर्भ सूची

- अहमद, एम. (2025). सोशल मीडिया उपयोग एवं विद्यार्थियों के व्यवहार का अध्ययन. जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी।
- फरीद, एस., एवं जबीन, एस. (2024). किशोरों में सोशल मीडिया एवं भावनात्मक व्यवहार का विश्लेषण. जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज।
- शर्मा, आर. (2023). किशोरों की भावनात्मक परिपक्वता एवं उसके निर्धारक कारक. भारतीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका।
- गुप्ता, पी. (2022). सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव. जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड साइकोलॉजी।
- सिंह, के. (2021). डिजिटल युग में किशोरों का सामाजिक एवं भावनात्मक विकास. नई दिल्ली: शैक्षिक प्रकाशन।